Daily Gospel Reflections in Hindi

01 June 2019

मत्ति 3:7-12

PRODUCE THE FRUIT OF REPENTANCE

आज का सुसमाचार दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में अपने पास बपतिस्मा के लिए आये फरीसियों और सदूकियों को देख कर योहन बपतिस्ता आग–बबुल होते है। योहन यर्दन नदी में बपतिस्मा दे रहा था, येरूसालेम, सारी यहूदिया और समस्त यर्दन प्रान्त के लोग उनके पास आते थे। लेकिन जब उसने फरीसियो और सदूकियो को आते देखा तब वह गुस्से में बोलने लगा, सांप के बच्चों क्यों आये ? किसने तुम्हें सचेत किया? योहन ने उन्हें 'सॉप के बच्चों' इसलिए पुकारा कि उनका काम शैतानी था। पवित्र बाइबिल में साँप शैतान का प्रतीक है और उनका व्यवहार, विचारधारा शैतान की संतान जैसे कपटी और झूठे थे। यहुदि सोच रहे थे कि वे इब्राहिम की संतान है, चुने हुए है इसलिए बच जायेंगे। लेकिन योहन उन्हें समझाता है कि जो अच्छा फल उत्पन्न करता है वही बच पाएगा या, ईसाई होने से हम नहीं बचेंगे बल्कि हमारा फल अच्छा होना चाहिए।

दूसरे भाग में योहन येसु और उनके द्वारा दिया जाना वाला बपतिस्मा (पवित्र आत्मा) और न्याय विधी के बारे में बताता है। हमारे जीवन में अच्छा फल उत्पन्न करने के लिए हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की जरूरत है। बारहवाँ वचन कहता है वे अपना गेहूँ बख़ार में जमा करेंगे। जीवन के अंत तक येसु का अपना गेहूं बने रहने का बुलावा है सबका। संत इरेनियूस कहता है ''मैं येसु का गेहूं हूँ'' हम भी येसु का गेहूं बनने के लिए कोशिश करें।

Rev. Fr. Ebin Uppukandathil

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019